भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद

(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय)

आधुनिक नर्सरी की स्थापना हेतु क्षमता निर्माण तथा रोपण सामग्री उत्पादन में माइकोराइजल जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग: एक रिपोर्ट

फरवरी 20, 2025

भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (हि.व.अ.सं.) ने "आधुनिक नर्सरी की स्थापना हेतु क्षमता निर्माण तथा रोपण सामग्री उत्पादन में माइकोराइजल जैव प्रौद्योगिकी का उपयोग" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 20 फरवरी 2025 को कृषि विज्ञान केंद्र, सरू, जिला चंबा में किया। इस कार्यक्रम में चंबा जिले के 40 वन अधिकारी, कर्मचारी एवं फील्ड स्टाफ ने भाग लिया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य आधुनिक नर्सरी की स्थापना और माइकोराइजल जैव उर्वरकों के उपयोग पर जागरूकता बढ़ाना था। कार्यक्रम के समन्वयक, डॉ. अश्वनी तपवाल, वैज्ञानिक-एफ एवं प्रभागाध्यक्ष, वन संरक्षण प्रभाग, हि.व.अ.सं., शिमला, ने मुख्य अतिथि श्रीमती कंचन देवी, भा.व.से., महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून, तथा विशिष्ट अतिथि श्री अभिलाष दामोदरन, भा.व.से., मुख्य अरण्यपाल, वन वृत्त चंबा, एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया।डॉ. तपवाल ने प्रशिक्षण के दौरान आधुनिक नर्सरी की स्थापना में माइकोराइजा के महत्व और उपयोग पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने 'हिम मृदा संजीवनी' नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक विकसित किया है। यह एक मिट्टी और वर्मीक्यूलाईट वाहक आधारित फॉर्मूलेशन है, जिसका उपयोग औषधीय पौधों, सब्जियों और चौड़ी पत्ती वाली फसलों की जैविक खेती में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने 'हिम ग्रोथ बूस्टर' नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक भी विकसित किया है, जिसे शंकुधारी पौधशालाओं में ग्रोथ बूस्टर के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इससे नर्सरी में शंकुधारी पौधों की वृद्धि अवधि कम होगी, जिससे रोपण बेहतर तरीके से स्थापित हो सकेंगे। डॉ. तपवाल ने यह भी बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम हिमाचल प्रदेश सरकार के हिमाचल प्रदेश क्षतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना प्राधिकरण (CAMPA) के अंतर्गत वित्त पोषित परियोजनाओं के तहत आयोजित किया जा रहा है।

श्रीमती कंचन देवी, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून, ने अपने उद्घाटन भाषण में वानिकी में जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इनका उपयोग लागत प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ समाधान प्रदान करता है। साथ ही, उन्होंने

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा आधुनिक नर्सरी की स्थापना एवं माइकोराइजल जैव उर्वरक विकसित करने के प्रयासों की सराहना की और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण में बताई गई तकनीकों को अपनाने की सलाह दी। इस अवसर पर, श्रीमती कंचन देवी ने संस्थान द्वारा वानिकी विषयों पर तैयार की गई पुस्तिकाओं का भी विमोचन किया।

श्री अभिलाष दामोदरन, मुख्य अरण्यपाल, वन वृत्त चंबा, ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन के लिए हि.व.अ.सं., शिमला का आभार प्रकट किया और प्रतिभागियों को इस विषय पर गहन चर्चा करने की प्रेरणा दी।

डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला, ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कार्बनिक खाद, वर्मीकम्पोस्ट निर्माण और आधुनिक नर्सरी की स्थापना के लिए उपयोगकर्ता के अनुकूल तकनीकों पर चर्चा की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने हिमाचल प्रदेश के प्रमुख कॉनिफ़र प्रजातियों की कंटेनरीकृत नर्सरी तकनीकों पर अपने अनुभव साझा किए।

डॉ. वनीत जिष्टु, वैज्ञानिक-ई एवं प्रमुख, विस्तार प्रभाग, हि.व.अ.सं., ने पौधों की पहचान करने की तकनीकों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने चंबा जिले के वनों में पाई जाने वाली प्रमुख जड़ी-बूटियों की पहचान और उनके उपयोग पर भी प्रकाश डाला। इसके साथ ही, औषधीय पौधों की जैविक खेती को बढ़ावा देने और संस्थान की नर्सरी में औषधीय पौधों के स्टॉक की उपलब्धता के बारे में जानकारी दी।

डॉ. केहर सिंह ठाकुर, वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, सरू, ने वानिकी एवं बागवानी फसलों के लिए नर्सरी प्रबंधन पर अपने विचार साझा किए, जिससे प्रतिभागियों को उन्नत तकनीकों और नर्सरी संचालन की बेहतर समझ प्राप्त हुई।

KRISHI VIGYAN KENDRA
CHAMBA

औषधीय पौधों, सब्जियों और फसलों की करें जैविक खेती

संवाद सहयोगी, जागरण • चंबा : हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से आधुनिक नर्सरी की स्थापना हेतु क्षमता निर्माण तथा रोपण सामग्री उत्पादन में माइकोराइजा (कवक व पौधों के बीच पारस्परिक रूप से लाभकारी संबंध) जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग पर कृषि विज्ञान केंद्र सरू में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 40 वन अधिकारियों, कर्मचारियों व फील्ड स्टाफ ने भाग लिया। कार्यशाला में कंचन देवी महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून मुख्यातिथि जबकि अभिलाष दामोदरन मुख्य अरण्यपाल चंबा विशेष अतिथि मौजूद रहे।

कार्यक्रम समन्वयक डा. अश्वनी तपवाल विज्ञानी एवं प्रभागाध्यक्ष वन संरक्षण प्रभाग ने आधुनिक नर्सरी की स्थापना में माइकोराइजा के महत्व और उपयोग पर प्रकाश डालते हुए

कृषि विज्ञान केंद्र सरू में आयोजित कार्यशाला के दौरान वानिकी विषयों पर बनाई गई पुस्तक का विमोचन करते महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून कंचन देवी व अन्य • जागरण

बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने ' हिम मृदा संजीवनी ' नामक माइकोराइजा जैव उर्वरक विकसित किया है। यह एक मिट्टी और वर्मी क्यूलाइट वाहक आधारित फार्मूलेशन है, जिसका उपयोग

जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग पर कृषि विज्ञान केंद्र सरू में कार्यशाला, 40 वन अधिकारियों, कर्मचारियों व फील्ड स्टाफ ने भाग लिया

औषधीय पौधों, सब्जियों और चौड़ी पत्ती वाली फसलों की जैविक खेती में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त संस्थान ने ' हिम ग्रोथ बूस्टर ' नामक माइकोराइजा जैव उर्वरक भी विकसित किया है, जिसे शंकुधारी पौध शालाओं में ग्रोथ बूस्टर के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इससे नर्सरी में शंकुधारी पौधों की वृद्धि अवधि कम होगी, जिससे रोपण बेहतर तरीके से स्थापित हो सकेंगे।

डा. तपवाल ने बताया कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदेश सरकार के हिमाचल प्रदेश क्षतिपूरक वनीकरण कोष प्रबंधन और योजना प्राधिकरण के अंतर्गत वित्त पोषित परियोजनाओं के तहत आयोजित किया जा रहा है। वहीं कंचन देवी, महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून ने वानिकी में जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इनका उपयोग लागत प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ समाधान प्रदान करता है। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान द्वारा वानिकी विषयों पर तैयार की गई पुस्तिकाओं का भी विमोचन किया।

डा. वनीत विस्तार प्रभाग ने पौधों की पहचान करने की तकनीकों पर चर्चा की। उन्होंने चंबा जिले के वनों में पाई जाने वाली प्रमुख जड़ी-बूटियों की पहचान और उनके उपयोग पर भी प्रकाश डाला। इसके साथ ही औषधीय पौधों की जैविक खेती को बढ़ावा देने और संस्थान की नर्सरी में औषधीय पौधों के स्टाक की उपलब्धता के बारे में जानकारी दी।

राजेश वर्मा

आधुनिक नर्सरी पर किया जागरूक

चंबा के कृषि विज्ञान केंद्र सरू में प्रशिक्षण शिविर के दौरान मौजूद वन विभाग के कर्मचारी और अन्य। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

चंबा। कृषि विज्ञान केंद्र सरू में आधुनिक नर्सरी की स्थापना, क्षमता निर्माण और रोपण सामग्री उत्पादन में माइकोराइजल जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य आधुनिक नर्सरी की स्थापना और माइकोराइजल जैव उर्वरकों के उपयोग पर जागरूकता बढ़ाना रहा। कार्यक्रम में समन्वयक वैज्ञानिक-एफ एवं प्रभागाध्यक्ष डॉ. अश्वनी तपवाल जबकि मुख्यातिथि के रूप में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के महानिदेशक कंचन देवी मौजूद रहे।

विशेष अतिथि के रूप में मुख्य अरण्यपाल अभिलाष दामोदरन समेत वन मंडलाधिकारी चंबा कृतज्ञ कुमार सहित सभी प्रतिभागी उपस्थित रहे। डॉ. तपवाल ने प्रशिक्षण के दौरान आधुनिक नर्सरी की स्थापना में माइकोराइजल के महत्व और उपयोग पर प्रकाश डाला। बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने 'हिम मृदा संजीवनी' नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक विकसित किया है। यह एक मिट्टी और वर्मी क्यूलाइट वाहक आधारित फॉर्मूलेशन है, जिसका उपयोग औषधीय पौधों, सब्जियों और चौड़ी पत्ती वाली फसलों की जैविक खेती में किया जा सकता है।

मुख्यातिथि ने वानिकी में जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों के महत्व पर जानकारी दी। कार्यक्रम में जिले के 40 वन अधिकारी, कर्मचारी और फील्ड स्टाफ ने भाग लिया।

21/02/2025 09:25

हिम ग्रोथ बूस्टर से बढ़ेगी हरियाली

डाइट सरु में सजा प्रशिक्षण शिविर, माइकोराइजल तकनीक से पौधारोपण में नई क्रांति

नगर संवाददाता-चंबा

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून के हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से आधुनिक नर्सरी की स्थापना हेतु क्षमता निर्माण तथा रोपण सामग्री उत्पादन में माइकोराइजल जैव प्रौद्योगिकी को उपयोग विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन गुरुवार को कृषि विज्ञान केंद्र सरू में किया गया। इस मौके पर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून, की महानिदेशक आईएफएस कंचन देवी ने मुख्यातिथि और मुख्य वन अरण्यपाल चंबा आईएफएस अभिलाष दामोदरन और आईएफएस वनमंडलाधिकारी चंबा कृतज्ञ कुमार ने विशेषातिथि के तौर पर उपस्थिति दर्ज करवाई। कार्यक्रम के समन्वयक एवं वैज्ञानिक-एफ एवं प्रभागाध्यक्ष वन संरक्षण प्रभाग शिमला डाक्टर अश्वनी तपवाल ने मुख्यातिथि व विशेषातिथि का स्वागत किया। डा. तपवाल ने प्रशिक्षण के दौरान आधुनिक नर्सरी की स्थापना में माइकोराइजा के महत्व और उपयोग पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने हिम मृदा संजीवनी नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक विकसित किया है। यह एक मिट्टी और वर्मीक्यूलाइट वाहक आधारित फार्मूलेशन है, जिसका उपयोग औषधीय पौधों, सब्जियों और चौड़ी पत्ती वाली फसलों की जैविक खेती में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने हिम ग्रोथ बूस्टर नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक भी विकसित किया है, जिसे शंकुधारी पौधशालाओं में ग्रोथ बूस्टर के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इससे नर्सरी में शंकुधारी पौधों की वृद्धि अवधि कम होगी। इससे रोपण बेहतर तरीके से स्थापित हो सकेंगे। डा. तपवाल ने प्रशिक्षण के दौरान आधुनिक नर्सरी की स्थापना में माइकोराइजा के महत्व और उपयोग पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने हिम मृदा संजीवनी नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक विकसित किया है। यह एक मिट्टी और वर्मीक्यूलाइट वाहक आधारित फार्मूलेशन है, जिसका उपयोग उपयोग लागत प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल और टिका का समाधान प्रदान करता है। उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा आधुनिक नर्सरी की स्थापना एवं माइकोराइजल जैव उर्वरक विकसित करने के प्रयासों की सराहना की और प्रतिभागियों को प्रशिक्षण में बताई गई तकनीकों को अपनाने की सलाह दी। इस अवसर पर कंचन देवी ने संस्थान द्वारा वानिकी विषयों पर तैयार पुस्तिकाओं का भी विमोचन किया। मुख्य वन अरण्यपाल अभिलाष दामोदरन ने प्रतिभागियों को इस विषय पर गहन चर्चा करने की प्रेरणा दी। संस्थान के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने कार्बनिक खाद, वर्मी कम्पोस्ट निर्माण और आधुनिक नर्सरी की स्थापना के लिए, उपयोगकर्ता के अनुकूल तकनीकों पर चर्चा की। उन्होंने हिमाचल प्रदेश के प्रमुख कानिफर प्रजातियों की कंटेनरीकृत नर्सरी तकनीकों पर अपने अनुभव साझा किए। वैज्ञानिक ई- एवं प्रमुख विस्तार प्रभाग डा. वनीत सिंह ने पौधों की पहचान करने की तकनीकों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने चंबा जिले के वनों में पाई जाने वाली प्रमुख जड़ी-बूटियों की पहचान और उनके उपयोग पर भी प्रकाश डाला। औषधीय पौधों की जैविक खेती को बढ़ावा देने और संस्थान की नर्सरी में औषधीय पौधों के स्टॉक की उपलब्धता के बारे में जानकारी दी। कृषि विज्ञान केंद्र चंबा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. केहर सिंह ठाकुर ने वानिकी एवं बागवानी फसलों के लिए नर्सरी प्रबंधन पर अपने विचार साझा किए, जिससे प्रतिभागियों को उन्नत तकनीकों और नर्सरी संचालन को बेहतर समझ प्राप्त हुई। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में चंबा जिले के 40 वन अधिकारी ने भाग लिया।